P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-V* January-2016

# प्रधानमंत्री डा0 मनमोहन सिंह सरकार (यू.पी.ए.) की विदेशनीति का मूल्यांकन; भारत–अमेरिका परमाणु ऊर्जा सम्बन्ध के विशेष संदर्भ में

**धर्मवीर**
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
वाणिज्य–विभाग,
संत कवि बाबा बैजनाथ
रा0स्ना0म0वि0 हरख,
बाराबंकी, (उ0प्र0)

**स्मृति शुक्ला**
शोधार्थिनी,
राजनीति विज्ञान विभाग,
गनपत सहाय पी0जी0 कालेज,
सुल्तानपुर, (उ0प्र0)

**सारांश**

प्रस्तावित शोध–अध्ययन का अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था के संदर्भ में विशेष महत्व है। प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह की यू0पी0ए0 सरकार की अमरिका के प्रति विदेश नीति काफी लचीली रही है एवं दोनों के आपसी सम्बन्धों में व्यापक सुधार हुआ। इन व्यापक सम्बन्धों का दोनों देशों के हितों पर क्या दूरगामी प्रभाव पड़ेगा, इसी की विवेचना प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य विषय रहेगा। परमाणु समझौता लागू हो जाने के उपरान्त दोनों देशों के सम्बन्ध एक नये युग में प्रवेश कर गये हैं। शोध अध्ययन में उस पर भी दृष्टिपात करना आवश्यक होगा।

**मुख्य शब्द** : विदेशनीति, वर्तमान परिप्रेक्ष्य, आर्थिक व राजनीतिक परिदृश्य, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध।

**प्रस्तावना**

**यू.पी.ए. सरकार का गठन व प्रधानमंत्रो मनमोहन सिंह की अमरीका यात्रा**

मई 2004 में भारत में बी0जे0पी0 के नेतृत्व वाले एन0डी0ए0 के स्थान पर कांग्रेस के नेतृत्व में यू0पी0ए0 सरकार सत्ता में आई। इस सत्ता परिवर्तन ने भारत–अमरीका सम्बन्धों में विकास को एक अच्छी शक्ति दी। कांग्रेस के नेतृत्व में संगठित यू0पो0ए0 सरकार ने अपने साझे न्यूनतम कार्यक्रम में अमरीका के साथ सम्बन्धों के विकास की आव"यकता को स्वीकार किया। एक बार ऐसा भी प्रतीत हुआ कि साम्यवादी दलों, जिनके बाहरी समर्थन पर यह सरकार निर्भर थी, के दबाव के अधीन नई सरकार के शासन में भारत–अमरीकी सम्बन्धो के विकास की प्रगति धीमी ही रहेगी। परन्तु जून–जुलाई, 2004 में भारत सरकार ने अमरीका के साथ सम्बन्धों के विकास की गति को तेज करने का प्रयास किया। विदे"ा मन्त्री नटवर सिंह ने अमरीका की यात्रा की तथा प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने दोनों दे"ाों के सम्बन्धों को परम्परागत स्वरूप में मित्रतापूर्ण और अधिक–से–अधिक सहयोगी बनाने के पक्ष में अपनी सरकार की नीति की घोषणा की।

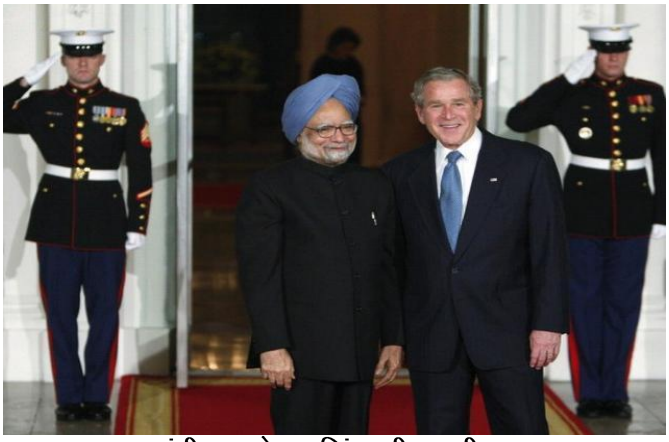

**प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की अमरीका यात्रा**

**शोध का उद्देश्य**

शोध के उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

1. शोध का उद्देश्य भारत तथा अमेरिका के राजनीतिक सम्बन्धों का अध्ययन करना।
2. भारत तथा अमेरिका के राजनीति सम्बन्धों में आये उतार–चढाव की परिस्थितियों का विश्लेषण करना।

3. शोध–अध्ययन के माध्यम से भारत–अमरिका के वर्तमान सम्बन्धों की जानकारी प्राप्त करना।
4. भारत तथा अमरिका के सम्बन्धों में सुधार लाने के लिए किये गये प्रयासों का मूल्यांकन करना।
5. आधुनिक अन्तराष्ट्रीय राजनीति में भारत तथा अमरिका दो शक्तिशाली देशों के सम्बन्धों तथा उनके महत्व पर प्रकाश डालना।
6. परमाणु–शस्त्रों के साथ भारतीय परमाणु नीति की स्वतंत्रता को बनाये रखना।

**सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण**

भारत की विदेश नीति भारत–अमेरिका सम्बन्ध के विशेष सन्दर्भ में निम्न पस्तकों का सर्वेक्षण किया गया है–

1. भारत की विदेश नीति– एक विश्लेषण – आर0एस0 यादव।
2. भारत की विदेश नीति– वी0एन0 खन्ना, लिपाक्षी अरोड़ा।
3. भारतीय विदेश नीति– जे0 एन0 दीक्षित।
4. भारतीय उपमहाद्वीप के प्रति यू0एस0ए0– के0के0 मिश्रा।
5. 1971 के उपरान्त भारतीय विदेश नीति की बदलती तस्वीर – गोपालकृष्ण शर्मा।
6. भारतीय विदेश नीति का मूल्यांकन– शीला ओझा।

**शोध प्रविधि**

इस शोध अध्ययन में ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक दोनों पद्धतियों का प्रयोग किया जायेगा। इसक अन्तर्गत भारत–अमेरिका सम्बन्धों में आये उतार–चढ़ावों एवं नये विकासों पर सघन दृष्टिपात किया जायेगा जिससे अध्ययन को बहुआयामी और तथ्यपरक बनाया जा सके।

**शोध परिकल्पना**

भारतीय विदेश नीति के चिर–परिचित मूल सिद्धान्तों जैसे– गुट निरपेक्षता, पंचशील, सार्क दशों के साथ अधिक सहयोग एवं मित्रता पूर्ण सम्बन्धों की स्थापना करना, तीसरी दुनिया के देशों के साथ सहयोग में वृद्धि, संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ सम्बन्धों का विकास करना, डब्ल्यू0टी0आ0 में भारत तथा तीसरी दुनिया के देशों के हितों की सुरक्षा करना, परमाणु–शस्त्रों के साथ भारतीय परमाणु नीति की स्वतंत्रता को बनाये रखना प्रस्तुत शोध परिकल्पना होगी।

परमाणु सम्बन्धों के विस्तार से भारतीय विदेश नीति में परम्परागत आधार कहाँ तक प्रभावित होंगे तथा अमेरिका की एशिया की राजनीति में विशेषकर दक्षिण एशिया की राजनीति में क्या बदलाव आयेगा? इसका अध्ययन भी अत्यन्त रोचक होगा।

**विष्कर्ष परिणाम**

नागरिक एवं सैनिक परमाणु शक्ति को अलग करने के सम्बन्ध में भारत ने जो परमाणु पृथक्करण की योजना बनाई थी, उस पर व्यापक विचार–विम"ार्ा किया गया और यह नि"चय प्रकट किया गया कि नागरिक परमाणु सहयोग समझौता (जुलाई, 2005) को पूरी तरह से लाग् किया जा सकेगा। अमरीका ने आई0टी0ई0 आर0 (Initiative for Fuel energy) के क्षेत्र में भारतीय भागीदारी का स्वागत किया और इस बात पर सहमति प्रकट की कि भविष्य में भी भारत की भागीदारिता बनी रहेगी। यह भी सहमति बनी कि दोनों दे"ा सुरक्षा वार्तालाप को आगे बढ़ायेगें और इस क्षेत्र में सकारात्मक सहयोग को विकसित करेगें।

भारत और अमरीका ने ज्ञान, अर्थव्यवस्था, नागरिक अन्तरिक्ष अभियान, सैटेलाइट नेवीगे"ान तथा अर्थ–साईंस (Earth Science) के क्षेत्र में सहयोग स्थापित करने के लिए सहमति बनाई। वि"व स्तरीय सुरक्षा के सम्बन्ध में इस बात पर सन्तोष प्रकट किया कि आतंकवाद विरोधी अभियान में दोनों दे"ा आगे से अधिक सहयोग कर रहे थे दोनों दे"ाों ने यह कहा कि आतंकवाद एक वि"व मुसीबत थी जिसकी समाप्ति के लिए वि"व के सभी भागों में संघर्ष होना चाहिए भारत और अमरीका दोनों ने यह दृढ़तापूर्वक कहा कि दोनों दे"ा वि"व के सम्मुख मौजूद चुनौतियों का सामना करने के लिए तथा लोकतन्त्र को दृढ़ बनाने के लिए प्रतिबद्ध थे। भारत और अमरीका में बढ़ रहे सुरक्षा सहयोग का दोनों नेताओं ने स्वागत किया और यह आ"ाा प्रकट की कि प्रतिरक्षा सहयोग संरचना समझौते के आधार पर दोनों दे"ाों में प्रतिरक्षा के क्षेत्र में सहयोग और भी विकसित हुआ।

2 मार्च, 2006 के दिन भारत–अमरीका सम्बन्धों को एक नया वि"वास प्राप्त हुआ जब भारत न परमाणु पृथकीकरण के सम्बन्ध में जो योजनाएं बनाई तथा जिसके अन्तर्गत नागरिक परमाणु संयंत्रों द्वारा गैर–नागरिक या सैनिक परमाणु सयन्त्रों तथा सुविधाओं के बीच में पृथकीकरण करना था, उसे अमरीका ने स्वीकार कर लिया। भारत ने यह सहमति बनाई कि उसके 22 परमाणु संयंत्रों में से 14 को नागरिक परमाणु संयंत्र की श्रेणी में रखा जाएगा तथा जिसके सम्बन्ध में अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा संगठन (IAEA) अधीन निगरान–सुरक्षा के अधीन लाया जाएगा तथा बाकी आठ परमाणु संयंत्रों का प्रयोग भारत अपने सैनिक परमाणु कार्यक्रम को संचालित करने के लिए अलग रखेगा तथा इस पर अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा संगठन की कोई भूमिका नहीं होगी। अमरीका ने भारत के इस प्रस्ताव के साथ सहमति प्रकट की तथा यह स्वीकार किया कि अपने परमाणु संयंत्रों के लिए आव"यक यूरेनियम ईंधन की आपूर्ति भारत को की जाएगी ताकि भारत अपनी बढ़ रही ऊर्जा सुरक्षा आव"यकताओं को पूर्ण कर सके।

इसके साथ यह भी स्पष्ट किया गया कि भारत भविष्य में जिन परमाणु सयत्रों का निर्माण करेगा, उसको अपनी इच्छा तथा आव"यकतानुसार नागरिक एवं सैनिक परमाणु संयंत्रों के रूप में परिभाषित करेगा। इस सम्बन्ध में भारत को पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त होगी तथा बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के भारत सभी परमाणु शक्ति सम्बन्धी निर्णय लेने में स्वतंत्र होगा।

इस भारत–अमरीकी परमाणु पृथकीकरण समझौते ने नि"चय हो विकसित हो रहे भारत–अमरीकी सम्बन्धों को एक अच्छा आधार दिया। अमरीका ने पी–5 दे"ाों के अतिरिक्त अप्रत्यक्ष रूप में भारत को एक परमाण शक्ति के रूप में स्वीकार किया तथा यह निर्णय लिया कि वह भारत की बढ़ रही ईंधन की जरूरतों की पूर्ति में सहयोग करेगा। इस समझौते से यह आ"ाा बनी कि अब भारत परमाणु आपूर्ति समूह (Nuclear Supply Group) के

45 दे"ाों वि"ोषकर यूरोपीय संघ के दे"ाों रूस, जापान, आस्ट्रेलिया तथा दक्षिण अफ्रीका से परमाणु ईंधन की प्राप्ति के योग्य हो जाएगा। इस समझौते को अमरीका ने स्वीकार करके यह दिखलाया कि अब वह भारत को उभार रही अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में अधिक महत्वपूर्ण स्थान दे रहा था तथा उसने यह स्वीकार कर लिया कि भारत उच्च परमाणु तकनीक के साथ एक जिम्मेवार देश था।

लेकिन कुछ आलोचकों ने यह मत दिया कि यह समझौता भारत की परमाणु प्रभुसत्ता को सीमित करेगा, क्योंकि इसके अधीन भारत के परमाणु संयंत्र अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा संगठन की निगरानी तथा सुरक्षा नियमों के अधीन आ जाएंग तथा इससे भारत की प्रतिरक्षा समर्थता को हानि पहुंच सकती थी, लेकिन भारत के बहुत–से राजनीतिक दलों, वैज्ञानिकों तथा प्रतिरक्षा वि"ोषज्ञों ने इस समझौते का स्वागत किया, क्योंकि इस समझौते ने भारत को एक परमाणु शक्ति के रूप में मान्यता दी थी तथा भारत ने अभी भी NPT पर हस्ताक्षर न करने का निर्णय लिया हुआ था यह समझौता भारतीय परमाणु ऊर्जा सुरक्षा आव"यकताओं की पूर्ति करने के योग्य था तथा इसके अधीन भारत ने अपने सैनिक परमाणु प्रोग्राम को आव"यकता के अनुसार आगे विकसित करने का अधिकार सुरक्षित कर लिया था। इस समझौते द्वारा भविष्य में भारतीय परमाणु शक्ति के विकास के सम्बन्ध में कोई सीमा निर्धारित नहीं की गई थी और यह स्पष्ट तौर पर कहा गया था कि अपने भविष्य की परमाणु ऊर्जा एवं परमाणु सुरक्षा की पूर्ति के लिए भारत सभी प्रकार के फैसले करने के योग्य होगा। भारत अपनी प्रभुसत्ता की सुरक्षा की आव"यकताओं को देखते हुए अपनी परमाणु शक्ति को विकसित करने का अधिकारी होगा।

नि"चय ही भारत–अमरीकी परमाणु समझौते ने न केवल भारत–अमरीकी सम्बन्धों को एक नया वि"वास और सेहत प्रदान की बल्कि इसके साथ ही परमाणु आपूर्ति समूह के दे"ाों को भी इस बात के लिए प्रेरित किया कि वे भारत की परमाणु ईधन की आव"यकताओं को पूरा करने के लिए सहमति बनाएं। इस समझौते के बाद अमरीकी कांग्रेस के दानों सदनों ने इस समझौते को स्वीकार कर लिया और दिसम्बर, 2006 में राष्ट्रपति जार्ज ब"ा ने अमरीकी कांग्रेस द्वारा पास सम्बन्धित बिल पर हस्ताक्षर करके इसको एक कानून का स्वरूप दे दिया।

समकालीन वर्षों में भारत–अमरीका सम्बन्ध (Indo-US Relations in Contemporary years) : मार्च, 2006 में अमरीकी राष्ट्रपति जार्ज डब्ल्यू0 बु"ा की भारत–यात्रा के प"चात भारत तथा अमरीका के द्वि–पक्षीय सम्बन्ध व्यापक रूप में विकसित होने लगे। अप्रैल 2006 में भविष्य में बिजली उत्पादन के सम्बन्ध में एक समझौता किया गया जिसके अधीन नई तकनीक के आधार पर भारत में बिजली उत्पादन की प्रक्रिया संचालित होनी थी। इस तकनीक के अधीन पर्यावरण को दूषित करने वाली कार्बन गैस की मात्रा वातावरण में नहीं पड़नी थी। मई, 2006 में भारत की ईसरों (ISRO) तथा अमरीका की ना"ाा (NASA) ने एक समझौता किया जिसके अधीन अमरीका ने भारत के चन्द्रमा अभियान में भागीदारी करने पर सहमति प्रकट की और यह कहा कि भारतीय चन्द्रमा मि"ान–चन्द्रायन–1 अमरीका के दो Payloads को भी लेकर जाएगा। इसके कुछ देर बाद भारत और अमरीका ने मानव–तस्करी को रोकने के लिए एक व्यवस्था विकसित करने के समबन्ध में सहमति बनाई। यह भो सहमति बनी कि न"ाीले पदार्थों की तस्करी को रोकने के लिए भी दोनों दे"ा मिल कर कार्य करेगें।

जुलाई, 2006 में तथा बाद में फरवरी 2007 में जब आतंकवादियों ने क्रम"ाः मुम्बई तथा समझौता एक्सप्रेस में बम विस्फोट किए तो अमरीका ने कड़े शब्दों में इसकी निंदा की। भारत और अमरीका ने एक बार फिर अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद की समाप्ति के लिए आपसी सहयोग के प्रति वचनबद्धता को दोहराया। अमरीका ने पाकिस्तान को यह कहा कि वह पाकिस्तान में काय कर रहे कुछ समूहों की गतिविधि पर नियन्त्रण लगाने के लिए उचित कदम उठाए। भारत और अमरीका के आर्थिक और व्यापारिक सम्बन्ध आज लगातार विकसित हो रहे है। दोनों दे"ा आपसी सम्बन्धों के सभी क्षेत्रों में अपने सहयोग को बढ़ा रहे है। वि"ोषकर प्रतिरक्षा के क्षेत्र में दोनों दे"ा आपसी सम्बन्धों के सभी क्षेत्रों में अपने सहयोग को बढ़ा रहे है। वि"ोषकर प्रतिरक्षा के क्षेत्र में दोनों दे"ा आपसी सम्बन्धों को अधिक दृढ़ बना रहे है। और दोनों दे"ाों की सेनाएं अब नियमित रूप से साझे अभ्यास कर रही है। आतंकवाद की समाप्ति के उद्दे"य की पूर्ति के लिए दोनों दे"ा सहयोग कर रहे है। लेकिन भारत ने न तो इराक में अमरीकी कार्यवाही में शामिल होने की बात को स्वीकार किया है और न ही ईरान के सम्बन्ध में अमरीकी सोच के साथ सहमति प्रकट की है। भारत अमरीका के साथ सम्बन्धों का विकास व्यापक रूप में कर रहा है, परन्तु साथ ही साथ वह रूस तथा चीन के साथ भी आपसी सम्बन्धा का व्यापक एवं दृढ़ रूप में विकास कर रहा है।

समकालीन समय में भारत और अमरीकी सम्बन्ध कई–एक प्रमुख तत्वों के प्रभावाधीन लगातार सकारात्मक रूप में विकसित हो रहे है। ऐसे कुछ महत्वपूर्ण तत्व है :

1. अमरीका अब भारत के आर्थिक विकास के महत्व को अधिक स्वीकार करता है। एक लोकतन्त्रीय दे"ा के रूप में भारत ने जो प्रगति की है तथा जिस प्रकार से भारतीय अर्थ–व्यवस्था लगातार प्रगति कर रही है, उससे अमरीका प्रभावित हुआ है तथा भारत के साथ अपने आर्थिक, व्यापारिक और कारोबारी समबन्धों के क्षेत्र में अधिक व्यापक सहयोग स्थापित करना चाहता है। भारतीय आर्थिक बाजार वि"व का दूसरा सबसे तेजी से विकसित होने वाला बाजार बन कर उभरा है और इस तत्व ने अमरीका को भारत के साथ सम्बन्धों का विकास करने के लिए प्रेरित किया है।
2. भारत ने अपने प्रयत्नों से अपनी परमाणु शक्ति का विकास किया ह। भारत के पास एक काफी विकसित परमाणु प्रौद्योगिकी है तथा भारत ने एक जिम्मेवार परमाणु शक्ति के रूप में व्यवहार किया है। इस तथ्य ने अमरीकी जनता तथा प्र"ाासन को सकारात्मक रूप में प्रभावित किया है। इसी के आधार पर भारत–अमरीका परमाणु समझौता किया हुआ है तथा इस समझौते ने दोनों दे"ाों में सहयोग को विकसित करने के लिए एक अधिक सकारात्मक तथा स्वस्थ वातावरण पैदा किया है। यह समझा जाता है कि आने वाले समय में भारत और अमरीका दोनों परमाणु

प्रौद्योगिकी के विकास के क्षेत्र में तथा प्रतिरक्षा के क्षेत्र में अधिक व्यापक सहयोग स्थापित करने का प्रयास करेगें।

3. उभर रही नयी अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में अमरीका भारत की सक्रिय एवं दृढ़ भूमिका की सम्भावना को स्वीकार करता है और इसी कारण वह भारत के साथ सम्बन्धों के विकास के प्रति अधिक उत्साहित है।
4. अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में चीन की बढ़ती हुई भूमिका तथा शक्ति के साथ–साथ चीन–रूस सम्बन्धों में विकसित हो रही सामरिक भागीदारी को देखते हुए अमरीका यह चाहता है कि वह भारत के साथ अपने सम्बन्धों को अधिक व्यापक तथा प्रौढ़ बनाए ताकि भारत की दृढ़ स्थिति चीन तथा रूस की बढ़ रही शक्ति पर एक अंकु"ा का कार्य करे।
5. वि"व राजनीति में अमरीका एक महा"ाक्ति है। भारत का यह वि"वास है कि 21वीं शताब्दी की अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में संयुक्त राज्य अमरीका के साथ अपने सम्बन्धों का व्यापक रूप में विस्तार करना उसके लिए आव"यक है। भारत अपनी ऊर्जा सुरक्षा की आव"यकताओं को देखते हुए परमाणु ऊर्जा तथा परमाणु प्रौद्योगिको के विकास की आव"यकता को समझता है और इसके लिए यह आव"यक समझता है कि संयुक्त राज्य अमरीका से सहयोग प्राप्त किया जाए। अमरीका के साथ किए गए परमाणु समझौते के आधार पर भारत परमाणु आपूर्ति समूह के अन्य दे"ाों से अपनी ऊर्जा सुरक्षा के लिए आव"यक परमाणु ईंधन प्राप्त कर सकता है।
6. भारत और अमरीका दोनों ही आर्थिक, व्यापारिक तथा कारोबारी क्षेत्र में अपने सम्बन्धों को विकसित करके अपनी–अपनी अर्थ–व्यवस्थाओं को अधिक शक्ति"ाली बना सकते है। भारत एक ज्ञान–"ाक्ति सम्पन्न दे"ा है जिसने सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र मे उच्च–स्तरीय विकास किया है। अमरीका में बसे भारतीय मूल के लोगों ने अमरीका के विकास और शक्ति में एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस तत्व ने अमरीका को भारत के साथ सम्बन्धों में विकास के लिए प्रेरित किया है। भारत भी यह स्वीकार करता है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उच्च–तकनीक प्राप्त करने के लिए यह आव"यक है कि अमरीका के साथ सम्बन्धों को अधिक व्यापक और सहयोगी बनाया जाए। इस तत्व ने भारत को अमरीका के साथ सम्बन्धों को अधिक सक्रियता के साथ प्राथमिकता के आधार पर विकसित करने के लिए प्रेरित किया है।
7. पिछले एक द"ाक में भारत और अमरीका के सम्बन्धों में जो महत्वपूर्ण विकास हुए हैं– सामरिक सहयोग में अगला कदम, परमाणु समझौता, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी समझौता, प्रतिरक्षा सहयोग संरचना समझौता, भारत–अमरीकी आर्थिक एवं व्यापारिक सम्बन्धों में वृद्धि आदि सकारात्मक वि"ोषताओं ने मिल कर एक ऐसे सकारात्मक वातावरण को पैदा किया है जिसने भारत और अमरीका दोनों एक–दूसरे के साथ सभी क्षेत्रों में सम्बन्ध और सहयोग व्यापक बनाने के लिए प्रेरित हुए है।
8. अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद की समाप्ति की प्रक्रिया में आज अमरीका भारत की भूमिका तथा अव"यकता को अधिक अच्छी तरह से स्वीकार करता है। अफगानिस्तान में आतंकवाद के विरूद्ध संघर्ष की प्रक्रिया में अमरीका ने इस बात को अनुभव किया है कि आतंकवाद की जड़े अफगानिस्तान–पाकिस्तान सीमा–क्षेत्र में मौजूद है। अलकायदा की समाप्ति आज अमरीकी विदे"ा–नीति की एक प्रमुख आव"यकता है। अमरीका अब पाकिस्तान पर यह दबाव बना रहा है कि उसे अपने क्षेत्र में सक्रिय आतंकवादी तत्वों को सख्ती से कुचलना चाहिए। क"मीर के सम्बन्ध में भी अब अमरीका का दृष्टिकोण अधिक वस्तुनिष्ठ है। इस तत्व ने भारत और अमरीका के सम्बन्धा को सकारात्मक रूप में प्रभावित किया है। भारत यह समझता है कि अमरीका के दबाव में पाकिस्तान को अपनी आतंकवाद समर्थित नीति को समाप्त करने के लिए विव"ा किया जा सकता है और अमरीका यह समझता है कि भारत के साथ अपने सम्बन्धा को देखते हुए पाकिस्तान के ऊपर आतकवाद की समाप्ति के लिए दबाव बनाना आव"यक है। इस तत्व ने भो भारत तथा अमरीका को आपसी सम्बन्धों एवं सहयोग को अधिक विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया है।

आज ये सभी प्रमख तत्व भारत–अमरीका द्वि–पक्षीय सम्बन्धों को सकारात्मक रूप में प्रभावित कर रहे है। यह सन्तोष की बात है कि शीत–युद्ध के समय के दबावों से भारत–अमरीकी समबन्ध अब मुक्त हो चुके है तथा दोनों दे"ा अब परस्परता के आधार पर अपने सम्बन्धों का विकास करने के लिए कार्य कर रहे है। यह आ"ाा की जाती है कि आने वाले वर्षों मे भारत–अमरीका द्विपक्षीय सम्बन्ध अधिक व्यापक और दृढ़ बनेगें। इस तथ्य को हम 21वीं शताब्दी की एक स्वाभाविक आव"यकता भी कह सकते है।

जनवरी, 2006 में भारत के विदे"ा सचिव ने अपने एक भाषण में कहा कि भारत और अमरीकी सम्बन्ध वर्तमान समय में कई–एक स्वतत्र विकासों के कारण उत्पन्न वातावरण म विकसित हो रहे है। वि"व शीत–युद्ध से बाहर आ चुका है, भारत एक प्रगति"ाील आर्थिक शक्ति के रूप में उभर कर सामने आया है, वि"व में ज्ञान के आधार पर कार्य करने वाले समाज अधिक प्रभावी हो रहे हैं तथा 21वीं शताब्दी के वातावरण में कई एक सकारात्मक तत्व है जिनक कारण भारत–अमरीकी सम्बन्ध अधिक व्यापक और सहयोगी बन रहे है। जुलाई 2005 में प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह की अमरीकी यात्रा से लेकर अब तक भारत–अमरीकी सम्बन्धों ने सकारात्मक रूप में प्रगति की है तथा यह सम्बन्ध साझे से लेकर अब तक भारत अमरीकी सम्बन्धों ने सकारात्मक रूप में प्रगति की है तथा यह सम्बन्ध साझे मूल्यों तथा साझे हितों के आधार पर विकसित हो रहे है। भारत और अमरीका के सम्बन्धों में विकास वि"व–"ाान्ति, सुरक्षा एवं विकास के लिए आव"यक है, क्योंकि दोनों ही दे"ा आतंकवाद तथा महाविना"ा के शस्त्रों की समाप्ति चाहते हैं तथा दोनों ही दे"ा सभी क्षेत्रों में आपसी भागीदारी तथा सहयोग को विकसित करने के प्रति आज बहुत अधिक सचेत है।

अमरीका आज वि"व व्यवस्था में भारत की केन्द्रीय सम्भावित भूमिका को स्वीकार करता है। भारत अपने विकास के लिए अमरीका के साथ सम्बन्धा और सहयोग के महत्व के प्रति पूरी तरह जागरूक है। ऐसे वातावरण ने सभी क्षेत्रों में भारत–अमरीकी सम्बन्धों के महत्व के प्रति पूरी तरह जागरूक है। ऐसे वातावरण ने सभी क्षेत्रों में भारत–अमरीकी सम्बन्धों में सहयोग के विकास को प्रक्रिया को शक्ति प्रदान की है। वर्तमान समय में भारत और अमरीका आपसी सम्बन्धों के सभी क्षेत्रों में सहयोग कर रहे हैं और दिन–प्रतिदिन यह सहयोग व्यापक और दृढ़ हो रहा है।

**निष्कर्ष**

मनमोहन सिंह सरकार के दस वर्षों के कार्यकाल में भारत अमेरिका सम्बन्धों में नि"चित रूप से घनिष्टता का संचार हुआ है। वि"व स्तर पर भारत की एन.एस.जी. दे"ाों से 'असैन्य परमाणु करार' करवाने में मदद की। सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए भारत का समर्थन किया है और भारत पर लगे 34 साल के परमाणु वनवास को खत्म किया है। साथ ही एक ऐसा मार्ग प्र"ास्त हुआ है जिस पर चल कर भारत एक शक्ति"ाली राष्ट्र के रूप में उभर सकता है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. यू0 यस0 – इण्डिया सिविल न्यूक्लियर कोआपरे"ान, इनि"ायेटिव रिलीस्ड बाइ दि यू0 यस0 स्टेट – डिपार्टमेन्ट, 4 नवम्बर, 2005
2. अंजलि घोष – दि न्यु इण्डिया – यू0 यस0 रिले"ानि"ाप (संकलित लेख) सम्पादक– अंजलि घोष, त्रिदीव चक्रवर्ती, अतिन्द्रयो ज्योति मजूमदार, ि"ावा"ाीष चटर्जी, ज्ञान पब्लि"िंग हाउस, नई – दिल्ली 2007, पृ0 144 – 145।
3. प्रका"ान विभाग, सूचना एवं प्रसारण विभाग, भारत सरकार प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के चुने हुए भाषण, खण्ड–3, जून 2006 – मई 2007, 2008 पृ0 438–442।
4. चेगप्पा, राज – नये परमाणु युग का आगाज – इण्डिया टूडे, 22 अक्टूबर, 2008।
5. शंकर कल्याणी – भारत – अमेरिका के बीच रणनीतिक भागीदारी, राजस्थान पत्रिका, 13 अगस्त 2008।
6. गुप्ता, शरद – ओबामा की भारत–यात्रा सहयोग का निवे"ा – हिन्दुतान, 10 नवम्बर 2010।
7. निम्कम, गिरिश – फिर उलक्षा करार, राजस्थान पत्रिका, 25 अगस्त, 2008।
8. सुब्रमण्यम, के0 – भारत एक वनवास की समाप्ति की ओर, प्रातःकाल, 8 अक्टूबर 2008।
9. यू0 आर0 घई एवं के. के. घई – भारतीय विदे"ा नीति – न्यू एकेडिमिक पब्लि"िंग कम्पनी 2007, जालन्धर, पृ0 187–195।
10. वी0 एन0 खन्ना एवं लिपाक्षी अरोड़ा, भारत की विदे"ा नीति, विकास पब्लि"िंग हाउस प्रा0 लि0 2008, नोएडा, दिल्ली, पृ0 369–375।
11. उमा पुरूषोत्तमन, इण्डो – यू0 यस0 डिफेन्स रिले"ान्ज, चैलेन्जेज एण्ड प्रास्पेक्ट्स, मो0 बदरूल आलम, सम्पादक– इण्डो – यू0 यस0 रिले"ान्ज, ि"ाप्रा पब्लिके"ान्स 2013, नई दिल्ली, पृ0 31:34।
12. राहुल मोंसले, वेद प्रका"ा, के0 आर0 गुप्ता, इण्डो–यू0 यस0 सिविल न्यूक्लियर डील, एटलांटिक पब्लि"ार्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2007, पृ0 86–87।
13. डॉ0 श्रीमती संगीता गुप्ता, भारत–अमेरिका रक्षा समझौता, प्रतियोगिता दर्पण नवम्बर, 2005, पृ0 718।
14. वि"व परिदृ"य, भारत–अमेरिका संबन्ध प्रधानमंत्री की अमेरिका यात्रा– प्रतियोगिता दर्पण अक्टूबर, 2007, पृ0 475।
15. शंकर प्रसाद तिवारी, परमाणु समझौते का यथार्थ प्रतियोगिता दर्पण, नवम्बर 2007, पृ0 688–89।
16. पदम सिंह, भारत की परमाण नीति और भारत–अमेरिका सम्बन्ध, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, 2014, नई–दिल्ली, पृ0 178–22